मॉड्यूल I - अर्थव्यवस्था

1

अर्थव्यवस्था और उसकी प्रक्रियाएँ

1.1 भूमिका

आप सभी विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। विद्यार्थी के रूप में आप पढ़ते हैं। आप में से कुछ कार्य द्वारा आय अर्जित करते हैं। जो लोग आय अर्जित नहीं करते, वे करना चाहते हैं ताकि उसे व्यय कर सकें या भविष्य में व्यय करने के लिए बचत कर सकें। ये सभी क्रियाएँ जैसे आय अर्जित करना, व्यय करना और बचत करना आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। आय, व्यय व बचत करने का स्त्रोत है। दूसरी ओर, व्यय और बचत करने की आवश्यकता आय अर्जित करने की प्रेरणा देती है। यदि व्यय और बचत करने की आवश्यकता न हो तो आय अर्जित करने की आवश्यकता नहीं होगी। इस प्रकार ये आर्थिक क्रियाएँ एक दूसरे से संबधित हैं और एक दूसरे पर निर्भर करती हैं।

आय का सृजन उत्पादन प्रक्रिया में होता है। उत्पादन प्रक्रिया द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं पर इसे व्यय किया जाता है। आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए व्यय करना उपभोग क्रिया है। अधिक उत्पादन करने के लिए व्यय करना निवेश क्रिया है। इस प्रकार उत्पादन, उपभोग और निवेश तीन मूलभूत आर्थिक क्रियाएँ या प्रक्रियाएँ हैं। जिस क्षेत्र में ये क्रियाएँ की जाती हैं उसे अर्थव्यवस्था कहते हैं। इस पाठ में आप अर्थव्यवस्था का अर्थ और इसमें होने वाली आर्थिक प्रक्रियाओं के बारे में पढ़ेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- अर्थव्यवस्था का अर्थ बता सकेंगे;
- अर्थव्यवस्था द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिन्न वस्तुएँ और सेवाएँ बता सकेंगे;
- उत्पादन, उपभोग और निवेश का अर्थ और महत्त्व बता सकेंगे;
- सकल और निवल निवेश में अंतर बता सकेंगे;
- बचत का अर्थ बता सकेंगे;
- विभिन्न आर्थिक प्रक्रियाओं में पारस्परिक संबंध बता सकेंगे।

1.3 अर्थव्यवस्था का अर्थ

आपने खेतों, दफ्तरों, कारखानों, दुकानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और अस्पतालों आदि में कार्य करते हुए लोगों को देखा होगा। ये सभी आय प्राप्त करने के लिए कार्य करते हैं। कार्य करने से इन्हें जो आय प्राप्त होती है उससे ये वस्तुएं और सेवाएं खरीदते हैं। अधिकांश वस्तुएं व सेवाएं हम अपनी और अपने परिवार के सदस्यों की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए खरीदते हैं।

हम व्यापार करने के लिए भी वस्तुएं और सेवाएं खरीदते हैं। वे कार्य स्थल जहां व्यक्ति कार्य करते हैं उत्पादन इकाइयां कहलाती हैं। ये उत्पादन इकाइयां इन व्यक्तियों की जीविका अर्जन का स्त्रोत होती हैं। इसमें कार्य करने वाले व्यक्तियों को मजदूरी और वेतन प्राप्त होता है। कुछ लोग भूमि, भवन या अन्य परिसंपत्तियों को उत्पादन इकाइयों को किराए पर देकर किराया प्राप्त करते हैं। कुछ लोग ऋण प्रदान करते हैं तथा उस पर ब्याज प्राप्त करते हैं। इन उत्पादन इकाइयों के मालिकों को लाभ प्राप्त होता है। इन सभी उत्पादन इकाइयों को मिलाकर अर्थव्यवस्था बनती है।

साधारणतया अर्थव्यवस्था शब्द का अर्थ एक देश की अर्थव्यवस्था से लिया जाता है। लेकिन यह जरूरी नहीं है। इसे एक शहर, नगर, गांव आदि की अर्थव्यवस्था से भी लिया जा सकता है। एक शहर की अर्थव्यवस्था में वहां स्थित कारखानें, दुकानें, दफ्तर और अन्य सभी कार्य स्थल शामिल होते हैं। इसी प्रकार एक गांव की अर्थव्यवस्था में वहां स्थित खेत, दुकानें और अन्य सभी प्रतिष्ठान जहां व्यक्ति काम करते हैं शामिल किए जाते हैं। इसी प्रकार हम विश्व अर्थव्यवस्था की भी बात कर सकते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में भारत में विद्यमान सभी उत्पादन इकाइयां या कार्य स्थल शामिल होते हैं।

1.4 अर्थव्यवस्था क्या प्रदान करती है?

अर्थव्यवस्था वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करती है। ये वस्तुएं और सेवाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से व्यक्तियों की आवश्यकताएं संतुष्ट करती है। उपभोक्ताओं को प्रदान की जाने वाली वस्तुएं और सेवाएं प्रत्यक्ष रूप से आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है। अतः इन्हें उपभोक्ता वस्तुएं और सेवाएं कहा जाता है। उत्पादकों को प्रदान की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग और अधिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जाता है। इनका अंतिम उद्देश्य उपभोक्ताओं के लिए अधिक उत्पादन करना होता है। ये आवश्यकताओं को परोक्ष रूप से संतुष्ट करती है। अतः इन्हें उत्पादक वस्तुएं और सेवाएं कहा जाता है।

इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं को दो वर्गों में बांटा जाता है :

(क) उपभोक्ता वस्तुएं और उपभोक्ता सेवाएं
(ख) उत्पादक वस्तुएं और उत्पादक सेवाएं

(क) उपभोक्ता वस्तुएं और उपभोक्ता सेवाएं

(i) उपभोक्ता वस्तुएं

वे वस्तुएं जो आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करती हैं, उपभोक्ता वस्तुएं कहलाती हैं। इसमें खाद्य वस्तुएं, कपड़े, जूते, फर्नीचर, स्कूटर आदि वस्तुएं शामिल की जाती हैं जिन्हें हम अपनी व अपने परिवार के अन्य सदस्यों की आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करने के लिए खरीदते हैं। उपभोक्ता वस्तुओं को निम्नलिखित दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

(अ) एकीय उपयोग उपभोक्ता वस्तुएं, और

(ब) टिकाऊ उपयोग उपभोक्ता वस्तुएं

एकीय उपयोग उपभोक्ता वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जिनका केवल एक ही बार उपभोग हो सकता है जैसे दूध, चीनी, सब्जी, साबुन, कागज, तेल, पेंसिल आदि। टिकाऊ उपयोग उपभोक्ता वस्तुएं वे वस्तुएं होती है जिनका बार-बार उपभोग हो सकता है जैसे फर्नीचर, कपड़े, जूते, फ्रिज, पंखा, टेलीविज़न, रेडियो आदि।

(ii) उपभोक्ता सेवाएं

हमें उपभोक्ता वस्तुओं के अलावा उपभोक्ता सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, हमें बाल कटवाने के लिए नाई, कपड़ों को सिलवाने के लिए दर्जी, पढ़ाने के लिए अध्यापक, चिकित्सा के लिए डॉक्टर आदि की सेवाएं, बैंक सेवाएं, डाक सेवाएं, यातायात सेवाएं आदि की आवश्यकता होती है। ये सभी सेवाएं उपभोक्ता सेवाएं कहलाती हैं। इनसे उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से संतुष्टि होती है।

वस्तुओं के एकीय एवं टिकाऊ उपयोग के विपरीत सभी सेवाएं एकीय उपयोग सेवाएं होती हैं क्योंकि सेवाओं का उत्पादन एवं उपभोग एक ही समय में होता है।

(ख) उत्पादक वस्तुएं और उत्पादक सेवाएं

(i) उत्पादक वस्तुएं

जिन वस्तुओं का उपयोग और अधिक वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन करने के लिए किया जाता है उसे, उत्पादक वस्तुएं कहा जाता है जैसे मशीनें, औजार, भवन, कच्चा माल आदि। इन वस्तुओं का उपयोग उत्पादक केवल वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए ही नहीं अपितु सेवाओं का उत्पादन करने के लिए भी करते हैं। उदाहरण के लिए, अस्पताल में एक्स-रे मशीन एक उत्पादक वस्तु है जोकि चिकित्सा सेवाएं प्रदान करती है। अतः उत्पादक वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जिनका उपयोग वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन करने के लिए किया जाता है। उत्पादक वस्तुओं को भी निम्नलिखित दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है :

(अ) एकीय उपयोग उत्पादक वस्तुएं, और
(ब) टिकाऊ उपयोग उत्पादक वस्तुएं।

एकीय उपयोग उत्पादक वस्तुएं वे वस्तुएं होती हैं जिनका उत्पादन में केवल एक ही बार उपयोग हो सकता है जैसे कच्चा माल। उत्पादन में एक बार उपयोग करने पर इनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। **टिकाऊ उपयोग उत्पादक वस्तुओं** का उत्पादन में बार-बार प्रयोग किया जा सकता है जैसे मशीनें, औजार, फर्नीचर, फैक्टरी भवन आदि।

(ii) उत्पादक सेवाएं

उत्पादन इकाइयों को केवल उत्पादक वस्तुओं की ही नहीं बल्कि उत्पादक सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, प्रत्येक उत्पादन इकाई को बैंक सेवा, परिवहन सेवा, बीमा सेवा, विज्ञापन सेवा आदि की आवश्यकता होती है। ये सभी सेवाएं वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में सहायक होती हैं। उत्पादक सेवाएं भी एकीय उपयोग सेवाएं होती हैं। वास्तव में, सभी सेवाएं चाहे वे उपभोक्ता सेवाएं हो या उत्पादक सेवाएं हो सभी का उत्पादन व उपभोग एक साथ होता है। अतः ये एकीय उपयोग सेवाएं कहलाती हैं।

(ग) कोई वस्तु उपभोक्ता वस्तु या उत्पादक वस्तु कैसे कहलाती है?

कोई वस्तु उपभोक्ता वस्तु है या उत्पादक वस्तु, यह वस्तु के उपयोग से निर्धारित होता है न कि उसकी की प्रकृति से। उदाहरण के लिए, जब एक परिवार द्वारा सब्जियां खरीदी जाती हैं तो ये उपभोक्ता वस्तु है लेकिन जब एक रेस्टोरेंट द्वारा सब्जियां खरीदी जाती हैं तो ये उत्पादक वस्तु है। इसी प्रकार एक रेस्टोरेंट द्वारा खरीदा गया फ्रिज़ उत्पादक वस्तु है लेकिन यदि यह एक परिवार द्वारा खरीदा जाता है तो यह एक उपभोक्ता वस्तु है। इसी प्रकार निजी उपयोग के लिए खरीदी गई कार उपभोक्ता वस्तु है। लेकिन यदि इसका टैक्सी के लिए उपयोग किया जाए तो यह उत्पादक वस्तु है। यदि किसी बैंक द्वारा पेंसिल, पेन, कागज, पंखा आदि वस्तुओं को खरीदा जाता है तो ये उत्पादक वस्तुएं हैं लेकिन यदि ये ही वस्तुएं बैंक के कर्मचारियों द्वारा अपने घर के लिए खरीदी जाएं तो ये उपभोक्ता वस्तुएं हैं। एक दर्जी के पास सिलाई मशीन उत्पादक वस्तु है लेकिन एक गृहणी के पास सिलाई मशीन उपभोक्ता वस्तु है।

इसी प्रकार कोई सेवा उत्पादक सेवा है या उपभोक्ता सेवा यह सेवा की प्रकृति से निर्धारित नहीं होता बल्कि सेवा के उपयोग से निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए, बैंकिंग सेवाएं, परिवहन सेवाएं, चिकित्सा सेवाएं आदि उपभोक्ता और उत्पादक दोनों प्रकार की सेवाएं हो सकती हैं। ये सेवाएं उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग करने पर उपभोक्ता सेवाएं और उत्पादकों द्वारा उपयोग करने पर उत्पादक सेवाएं कहलाती हैं।

याद रखिए

- अर्थव्यवस्था एक प्रणाली है जिसके द्वारा मनुष्य जीविका उपार्जन करता है।
- अर्थव्यवस्था एक विशेष क्षेत्र में विद्यमान उत्पादन इकाइयों जैसे खेत, कारखानें, दुकानें, बैंक आदि से बनती है। यह क्षेत्र एक गाँव, शहर, देश या विश्व हो सकता है।
- प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने वाली वस्तुओं और सेवाओं को उपभोक्ता वस्तुएं व सेवाएं कहते हैं।
- जिन वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग और अधिक वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन करने के लिए किया जाता है उन्हें उत्पादक वस्तुएं और सेवाएं कहते हैं।
- केवल एक ही बार उपयोग की जा सकने वाली वस्तुओं को एकीय उपयोग वस्तुएं कहते हैं।
- बार-बार उपयोग की जा सकने वाली वस्तुओं को टिकाऊ उपयोग वस्तुएं कहते हैं।
- सभी सेवाओं का उत्पादन व उपभोग एक साथ होता है इसलिए सभी सेवाएं एकीय उपयोग सेवाएं होती हैं।
- वस्तु या सेवा का उपयोग यह निर्धारित करता है कि वह उपभोक्ता वस्तु या सेवा है या उत्पादक वस्तु या सेवा।

पाठगत प्रश्न 1.1

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही व कौन-सा कथन गलत है?

(i) किसी देश के भौगोलिक क्षेत्र को अर्थव्यवस्था कहते हैं।
(ii) अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्ति जीविका उपार्जन करते हैं।
(iii) अर्थव्यवस्था में एक निश्चित क्षेत्र में विद्यमान उत्पादन इकाइयां शामिल होती हैं।
(iv) अर्थव्यवस्था केवल उपभोक्ता वस्तुएं और सेवाएं प्रदान करती हैं।
(v) अर्थव्यवस्था केवल उत्पादक वस्तुएं और उपभोक्ता सेवाएं प्रदान करती हैं।
(vi) सभी वस्तुएं व सेवाएं उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करती हैं।
(vii) सभी एकीय उपयोग वस्तुएं उपभोक्ता वस्तुएं होती हैं।
(viii) सभी सेवाएं एकीय उपयोग सेवाएं होती हैं।

2. निम्नलिखित को उपभोक्ता वस्तुओं और उत्पादक वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए :

(i) कृषि में प्रयोग किए जाने वाले उर्वरक
(ii) दर्जी के पास सिलाई मशीन
(iii) गृहणी के पास खाना पकाने के बर्तन
(iv) इंडियन एयरलाइन्स के हवाई जहाज़
(v) रेस्टोरेंट में खाना पकाने के बर्तन
(vi) पाठशाला में ब्लैक बोर्ड
(vii) दुकान में कपड़े
(viii) हलवाई के पास चीनी

3. निम्नलिखित को एकीय उपयोग और टिकाऊ उपयोग वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए :

(i)	दूध	(vi)	कागज
(ii)	बीज	(vii)	घड़ी
(iii)	घी	(viii)	पंखा
(iv)	खाना पकाने की गैस	(ix)	बर्तन
(v)	जूते	(x)	गमला

1.5 अर्थव्यवस्था की मूलभूत प्रक्रियाएं

अर्थव्यवस्था की मूलभूत प्रक्रियाओं से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है जिनके बिना अर्थव्यवस्था का अस्तित्व ही नहीं हो सकता।

अर्थव्यवस्था की तीन मूलभूत प्रक्रियाएं हैं : उत्पादन, उपभोग और निवेश ।

(क) उत्पादन

आमतौर पर, उत्पादन से तात्पर्य फैक्टरी में वस्तुओं के उत्पादन से लिया जाता है जैसे मशीनें, टेलीविज़न दवाइयां आदि का निर्माण या खेत में फसलों का उगाना। लेकिन अर्थशास्त्र में उत्पादन से तात्पर्य न केवल वस्तुओं के निर्माण से लिया जाता है बल्कि सेवाओं के उत्पादन से भी लिया जाता है। हम सभी के लिए सेवाएं भी उतनी ही आवश्यक हैं जितनी की वस्तुएं। वास्तव में, कुछ वस्तुओं का उपयोग तब तक नहीं हो सकता जब तक उनके लिए अनिवार्य सेवाएं नहीं प्रदान की जाए। उदाहरण के लिए, टेलीविज़न या रेडियो का प्रयोग तब तक नहीं हो सकता जब तक कलाकारों और तकनीशियनों आदि की सेवाएं प्राप्त नहीं हों। इसी प्रकार रेल या बस जोकि वस्तु है तब तक उपयोग में नहीं लाई जा सकती जब तक ड्राइवरों की सेवाएं प्राप्त न हों। हमें व्यापारियों, वाहकों आदि की सेवा के बिना कोई भी वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती। अतः उत्पादन प्रक्रिया का संबंध एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने तक है।

कुछ कार्य ऐसे होते हैं जोकि एक परिवार के सदस्य अपने लिए या एक दूसरे के लिए करते हैं जैसे खाना पकाना, कपड़े धोना, घर की सफाई करना, कपड़ों पर इस्त्री करना, जूतों पर पालिश करना आदि। ऐसे कार्यों के मूल्य मापन में समस्याएं आती हैं क्योंकि इनके मूल्य और मात्रा संबंधी आंकड़े प्राप्त करना संभव नहीं होता है। अतः कुल उत्पादन का मूल्य ज्ञात करते समय इन्हें उत्पादन में शामिल नहीं किया जाता है। खाली समय में की जाने वाली सभी क्रियाएं जैसे घर के बगीचे में फल-फूल या सब्जियां उगाना आदि उपयुक्त आंकड़ों के अभाव के कारण उत्पादन में शामिल नहीं की जाती हैं।

(ख) उपभोग

उपभोग वह क्रिया है जिसका संबंध मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से संतुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग करने से है। हम खाद्य पदार्थों, कपड़ों, फर्नीचरों आदि का उपभोग करते हैं।

हम दर्जी, नाई, धोबी, शिक्षकों आदि की सेवाओं का उपभोग करते हैं। ये सभी उपभोग क्रियाएं हैं। जैसे ही इन वस्तुओं और सेवाओं को खरीदा जाता है उपभोग क्रिया संपन्न हो जाती है। अन्य शब्दों में, उपभोग से यहाँ अभिप्राय उपभोग उद्देश्य से वस्तुएं व सेवाएं प्राप्त करने से है।

परिवारों द्वारा किया गया सारा क्रय मकान के क्रय को छोड़कर, उपभोग क्रय कहलाता है। परिवार द्वारा मकान की खरीद एक उत्पादक वस्तु की खरीद मानी जाती है। लेकिन मकान के प्रयोग से उत्पन्न सेवा उपभोग कहलाएगी। इस प्रकार मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं का क्रय **उपभोग क्रय** कहलाता है।

(ग) निवेश

आमतौर पर, एक वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुएं उसी वर्ष में उपभोग नहीं की जाती हैं। सामान्यतः उत्पादन, उपभोग से निम्नलिखित कारणों से अधिक होता है :

(i) उत्पादन इकाइयों में जमा वस्तुएं

सभी वस्तुएं, उनका उपयोग करने वालों तक पहुंचने से पहले कई प्रक्रियाओं से गुजरती हैं। उदाहरण के लिए, जो कपड़ा हम पहनते हैं वह कई प्रक्रियाओं से गुजरता है। जैसे कपास से धागा बनाना, उससे कपड़ा बुनना, उसको रंगना, उसको सिलना और दुकानदार के पास उसको बेचने के लिए भेजना। इन सभी प्रक्रियाओं में वस्तु को कच्चा माल और अर्ध-निर्मित वस्तुएं कहा जाता है। यदि उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर कच्चा माल और अर्ध-निर्मित वस्तुओं का स्टॉक न हो तो उत्पादन का अगला चरण शुरू नहीं हो सकेगा। इसके अतिरिक्त विक्रेताओं के पास भी तैयार माल का कुछ स्टॉक होता है ताकि इनकी मांग होने पर तुरंत दिया जा सके। इस प्रकार वर्ष में हुए उत्पादन का एक भाग उत्पादन इकाइयों में ही निर्मित व अर्ध-निर्मित वस्तुओं और कच्चे माल के संग्रह के रूप में पड़ा रह जाता है। यह वर्ष में हुए उत्पादन का एक भाग है जो प्रयोग में नहीं आता है।

(ii) उत्पादन इकाइयों द्वारा टिकाऊ उपयोग उत्पादन वस्तुएं खरीदना

उत्पादन इकाइयाँ प्रति वर्ष स्थिर पूंजीगत वस्तुओं जैसे मशीनें, साज समान, गाड़ियाँ, भवन आदि पर निवेश करती हैं। ये सभी टिकाऊ उपयोग उत्पादक वस्तुएं होती हैं। यह वर्ष में हुए उत्पादन का दूसरा भाग है जो उपभोग के लिए प्रयोग नहीं होता।

उपरोक्त कारणों से एक वर्ष का उत्पादन उस वर्ष के उपभोग से अधिक रहता है। उत्पादन की उपभोग पर यह अधिकता निवेश कहलाती है। इस अधिकता के लिए जिम्मेदार कारण हैं : (i) स्टॉक निवेश तथा (ii) अचल निवेश

स्टॉक निवेश बनाम अचल निवेश

(i) स्टॉक निवेश

एकीय उपयोग उत्पादक वस्तुओं में निवेश को स्टॉक निवेश कहते हैं। इसका अर्थ है कच्चे माल, अर्ध -निर्मित माल और निर्मित माल के स्टॉक में वृध्दि होना। वर्ष के शुरू में इसके स्टॉक को आरम्भिक स्टॉक कहते हैं। वर्ष के अन्त में इसके स्टॉक को अंतिम स्टॉक कहते हैं। उदाहरण के लिए, वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल 1997 से शुरू होता है और 31 मार्च 1998 को समाप्त होता है तो 1 अप्रैल 1997 को एकीय उपयोग उत्पादक वस्तुओं का स्टॉक आरम्भिक स्टॉक कहलाएगा और 31 मार्च 1998 को इनका स्टॉक अन्तिम स्टॉक कहलाएगा।

अन्तिम स्टॉक और प्रारम्भिक स्टॉक का अन्तर **स्टॉक निवेश** कहलाता है। किसी विशेष वर्ष में यह संभव है कि उत्पादन उपभोग से कम हो। इससे यह पता चलता है अंतिम स्टॉक प्रारंभिक स्टॉक से कम है। अतः यह ऋणात्मक निवेश कहलाएगा। सारणी 1.1 में एक उदाहरण द्वारा स्टॉक निवेश की गणना की गई है।

सारणी 1.1
स्टॉक निवेश की गणना

मदें	प्रारंभिक स्टॉक (रूपयों में)	अंतिम स्टॉक (रूपयों में)	स्टॉक निवेश (रूपयों में)
कच्चा माल	10,000/-	12,000/-	2000/-
अर्ध-निर्मित माल	15,000/-	18,000/-	3000/-
निर्मित माल	20,000/-	18,000/-	(–)2000/-
कुल	45,000/-	48,000/-	3000/-

सारणी 1.1 से पता चलता है कि प्रारंभिक स्टॉक का कुल मूल्य 45,000/- रूपए है और अंतिम स्टॉक का कुल मूल्य 48,000/- रूपए है। अतः एक वर्ष में स्टॉक निवेश 3000/- रूपए है।

(ii) अचल निवेश

अचल पूंजीगत वस्तुओं के स्टॉक में टिकाऊ उपयोग उत्पादक वस्तुओं का योग **अचल निवेश** कहलाता है। उदाहरण के लिए, नई मशीनों, उपकरणों, भवन में नए कमरों आदि का निर्माण अचल निवेश है।

कुल निवेश, स्टॉक निवेश और अचल निवेश का योग होता है। इसे पूंजी निर्माण भी कहते हैं।

सकल निवेश बनाम निवल निवेश

आपने निवेश को अभी तक जिस रूप में पढ़ा है वह वास्तव में सकल निवेश है। निवेश का एक अन्य रूप निवल निवेश है। आइए, इन दोनों में क्या अन्तर है, यह समझने का प्रयत्न करें।

एक उत्पादन इकाई के पास कुछ अचल पूँजी होती है। यह अचल पूंजी जैसे मशीनें, औजार, कारखानें के भवन आदि के रूप में होती है। जब इस अचल पूंजी का उत्पादन में प्रयोग किया जाता है तो उत्पादन के दौरान इसमें कुछ टूट-फूट होती है। दुर्घटनावश भी इनमें कुछ क्षति हो सकती है। इनसे अचल पूंजी के मूल्य में कमी आती है। इसके अतिरिक्त अप्रचलन के कारण भी इनके मूल्य में कमी आती है। अप्रचलन से तात्पर्य उत्पादन की तकनीक में परिवर्तन या इनके द्वारा उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं की माँग में परिवर्तन के कारण अचल पूंजी के मूल्य में होने वाली कमी है। ये परिवर्तन अचल पूंजी को प्रचलन से बाहर कर देते हैं। उदाहरण के लिए, डीजल के इंजनों के प्रयोग में आने से भाप के इंजन प्रचलन से बाहर हो गए और बिजली के इंजनों के प्रयोग में आने से डीजल के इंजन अप्रचलित हो गए। फैशन में परिवर्तन के कारण भी मशीनें अप्रचलित हो जाती हैं।

अचल पूंजी के मूल्य में उनके उपयोग से होने वाली टूट-फूट और संभावित अप्रचलन के कारण होने वाली कमी को **मूल्यह्रास** या **अचल पूंजी का उपभोग** कहते हैं। यदि मूल्यह्रास या अचल पूँजी के उपभोग को सकल निवेश में से घटा दिया जाए तो निवल निवेश प्राप्त होगा। अतः

निवल निवेश = सकल निवेश – मूल्यह्रास

1.6 बचत

उत्पादन क्रिया उत्पादन इकाइयों में की जाती है। उत्पादन के साधनों के मालिक इन इकाइयों को सेवाएं प्रदान करते हैं। इसके बदले में उन्हें वेतन व मजदूरी, किराया, ब्याज और लाभ के रूप में आय प्राप्त होती है। ये अपनी आय का दो तरह से व्यय कर सकते हैं। आय का एक भाग आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए वस्तुओं और सेवाओं के खरीदने पर व्यय किया जा सकता है। इस व्यय को उपभोग व्यय कहते हैं। आय का जो भाग व्यय नहीं किया जाता है उसे **बचत** कहते हैं। इस प्रकार आय और व्यय का अन्तर बचत है।

बचत = आय – उपभोग व्यय

क्या आप बचत के उपयोग बता सकते हैं? बचत मुद्रा के रूप में होती है। बचत करने वाले व्यक्ति इसे अपने घर में या बैंक में रख सकते हैं। बचत करने के कई उद्देश्य हो सकते हैं। आपातकाल जैसे बीमारी, बुढ़ापे या असंभावित खर्चों के लिए बचत की जा सकती है। लेकिन साधारणतया बचत करने का मुख्य

उद्देश्य उसपर ब्याज कमाना होता है। इससे भविष्य में अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। बचत बैंकों द्वारा या प्रत्यक्ष रूप से ऋण के रूप में निवेशकों को दी जाती है।

बचत की उत्पादन प्रक्रिया में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वास्तव में बचत, निवेश के वित्त प्रबन्ध का मुख्य स्त्रोत है। जितनी अधिक बचत होगी उतनी ही अधिक निवेश की सम्भावना होगी। निवेश से तात्पर्य उत्पादन के लिए वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त करना है। बचत का उपयोग निवेश के लिए वस्तुएं प्राप्त करने के लिए किया जाता है। अतः बचत निवेश का आधार है।

1.7 आर्थिक प्रक्रियाओं के बीच पारस्परिक संबंध

उत्पादन, उपभोग और निवेश प्रक्रिया के बीच परस्पर संबंध हैं। ये संबंध निम्नलिखित तरीके से व्यक्त किए जा सकते हैं :

1. उत्पादन, उपभोग और निवेश का स्त्रोत है। यदि उत्पादन न हो तो उपभोग और निवेश भी नहीं होगा। उत्पादन की दी हुई मात्रा से अधिक उपभोग होने पर निवेश कम होगा।

2. उपभोग, उत्पादन और निवेश को प्रेरित करता है। यदि उपभोग की आवश्यकता न हो तो निवेश व उत्पादन करने की भी आवश्यकता नहीं होगी।

3. निवेश उत्पादन के स्तर को निर्धारित करता है। हम जितना अधिक निवेश करेंगे उतना ही अधिक हम उत्पादन करेंगे।

4. बचत निवेश के वित्त प्रबन्ध का मुख्य स्त्रोत है। अधिक बचत का अर्थ है अधिक निवेश, अधिक निवेश का अर्थ है अधिक उत्पादन, जिसका अर्थ है अधिक उपभोग और अधिक निवेश।

याद रखिए

- अर्थव्यवस्था की मूलभूत प्रक्रियाएं हैं : उत्पादन, उपभोग और निवेश।
- उत्पादन वह क्रिया है जिसमें वस्तुओं और सेवाओं का निर्माण होता है। इसमें न केवल भौतिक वस्तुएं बल्कि सेवाएं भी शामिल की जाती हैं।
- अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन न केवल उपभोग के स्तर को बल्कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन सामर्थ्य को भी प्रभावित करता है।
- उपभोग मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उपयोग करने की प्रक्रिया है।

- एकीय उपयोग उत्पादक वस्तुओं में निवेश स्टॉक निवेश कहलाता है।
- पूंजीगत वस्तुएं जैसे मशीनें, कारखानों के भवन आदि के स्टॉक में वृद्धि को अचल निवेश कहते हैं।
- स्टॉक निवेश और अचल निवेश के योग को सकल निवेश कहते हैं।
- अचल पूंजी के उपयोग से उसमें टूट-फूट या दुर्घटनावश क्षति और उत्पादन की तकनीक तथा वस्तुओं की मांग में परिवर्तन के कारण संभावित अप्रचलन मूल्यह्रास या अचल पूंजी का उपभोग कहलाता है।
- निवल निवेश = सकल निवेश – मूल्यह्रास
- बचत = आय – उपभोग व्यय
- उत्पादन, उपभोग और निवेश प्रक्रियाएं एक दूसरे पर निर्भर करती हैं।

पाठगत प्रश्न 1.2

1. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही और कौन-सा कथन गलत है?

(i) पाठशाला में पढ़ाना उत्पादन है।
(ii) एक दुकानदार द्वारा वस्तुएं बेचना उत्पादन है।
(iii) विद्यार्थी द्वारा लेखन सामग्री का प्रयोग करना उत्पादन है।
(iv) सरकारी कार्यालय में कार्य करना उत्पादन है।
(v) एक परिवार द्वारा कपड़े धोने की मशीन खरीदना उपभोग है।
(vi) पुनः बिक्री के लिए वस्तुएं खरीदना उपभोग है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सी उत्पादन क्रिया है ?

(i) नदी में नहाना।
(ii) परिवार के लिए दूध खरीदना।
(iii) नाई द्वारा बाल काटना।
(iv) सिनेमा हाल में सिनेमा देखना।
(v) स्वयं के उपयोग के लिए फर्नीचर खरीदना।

3. निम्नलिखित में से सही उत्तर पर सही का चिन्ह (✓) लगाइए।

(अ) उपभोग–
(i) वस्तुओं का उपयोग करने की क्रिया है।
(ii) आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुओं का उपयोग करने की क्रिया है।
(iii) वस्तुओं का दीर्घ अवधि तक उपयोग करने की क्रिया है।
(iv) उपयोगी वस्तुओं का उपयोग करने की क्रिया है।

(ब) निवेश–

(i) उत्पादन और बिना बिके स्टॉक का अन्तर है।

(ii) उत्पादन और उपभोग का अन्तर है।

(iii) उत्पादन और बचत का अन्तर है।

(iv) सकल निवेश और निवल निवेश का अंतर है।

(स) उत्पादन में–

(i) केवल वस्तुएं शामिल की जाती हैं।

(ii) केवल उत्पादक वस्तुएं शामिल की जाती हैं।

(iii) केवल उत्पादक वस्तुएं व सेवाएं शामिल की जाती हैं।

(iv) वस्तुएं और सेवाएं शामिल की जाती हैं।

(द) एक परिवार द्वारा साइकिल खरीदना–

(i) निवेश है।

(ii) उत्पादन है।

(iii) उपभोग है।

(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं।

आपने क्या सीखा

- अर्थव्यवस्था से तात्पर्य एक विशेष क्षेत्र में विद्यमान उत्पादन इकाइयों से है जो लोगों की जीविका अर्जन का स्रोत होती हैं।
- अर्थव्यवस्था से उत्पादक और उपभोक्ताओं को एकीए और टिकाऊ उपयोगी वस्तुएं और सेवाएं प्राप्त होती हैं।
- अर्थव्यवस्था में उत्पादन, उपभोग और निवेश तीन मूलभूत प्रक्रियाएं होती हैं।
- मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन होता है और इनके उपभोग से आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। उत्पादन और उपभोग का अंतर निवेश कहलाता है।

पाठांत प्रश्न

1. अर्थव्यवस्था से आप क्या समझते है ?
2. उदाहरण द्वारा उपभोक्ता वस्तुओं और उत्पादक वस्तुओं में अंतर बताइए।
3. उदाहरण की सहायता से उपभोक्ता सेवाओं और उत्पादक सेवाओं में अंतर बताइए।
4. एकीय उपयोग उत्पादक वस्तु और एकीय उपयोग उपभोक्ता वस्तु में अंतर बताइए।
5. टिकाऊ उपयोग उत्पादक वस्तु और टिकाऊ उपयोग उपभोक्ता वस्तु में अंतर बताइए।
6. उत्पादन और उपभोग में परस्पर संबंध बताइए।
7. सकल निवेश और निवल निवेश में अंतर बताइए।
8. अचल निवेश और स्टॉक निवेश में अंतर बताइए।

उत्तर

पाठगत प्रश्न 1.1

1. सही : (ii), (iii), (vi), (viii)
   गलत : (i), (iv), (v), (vii)
2. उत्पादक वस्तुएं : (i), (ii), (iv), (v), (vi), (vii), (viii)
   उपभोक्ता वस्तुएं : (iii)
3. एकीय उपयोग वस्तुएं : (i), (ii), (iii), (iv), (vi)
   टिकाऊ उपयोग वस्तुएं : (v), (vii), (viii), (ix), (x)

पाठगत प्रश्न 1.2

1. सही : (i), (ii), (iv), (v)
   गलत : (iii), (vi)
2. उत्पादन क्रिया : (iii)
3. सही : (अ) (ii), (ब) (ii), (स) (iii), (द) (iii)

पाठांत प्रश्न

1. पढ़िए अनुभाग 1.3
2. पढ़िए अनुभाग 1.3 क(i) और ख(i)
3. पढ़िए अनुभाग 1.3 क(ii) और ख(ii)
4. पढ़िए अनुभाग 1.3 क(i) और ख(i)
5. पढ़िए अनुभाग 1.3 क(i) और ख(i)
6. पढ़िए अनुभाग 1.7
7. पढ़िए अनुभाग 1.5(ग)
8. पढ़िए अनुभाग 1.5(ग)